खंड 'क' – संचयन-2 (पूरक पाठ्यपुस्तक)

1

हरिहर काका

– मिथिलेश्वर

पाठ की रूपरेखा

प्रस्तुत पाठ में लेखक 'मिथिलेश्वर' ने ग्रामीण परिवेश, वर्तमान में पारिवारिक संबंधों पर चढ़ी स्वार्थ-लोलुपता, बुजुर्गों के प्रति उदासीन व्यवहार तथा धर्म के नाम पर अंधभक्ति को चित्रित किया है। इस पाठ में हरिहर काका नाम का एक पात्र है, जिसकी अपनी कोई संतान नहीं है, परंतु उसके पास पंद्रह बीघे ज़मीन है और वही ज़मीन उसकी जान की आफत बन जाती है। अंत में उसी ज़मीन के कारण उसे सुरक्षा भी मिलती है। लेखक इस पाठ के जरिए समाज में हो रहे नकारात्मक बदलाव से हमें अवगत करवाना चाहता है कि आज का मनुष्य कितना स्वार्थी मनोवृत्ति का हो गया है।

पाठ का सार

प्रस्तुत कहानी लेखक के गाँव की अपनी कहानी है। हरिहर काका की दशा बहुत खराब है, वे बीमार हैं। लेखक उनसे मिलने जाते हैं; पर हरिहर काका उनसे बात तक नहीं करते हैं। उन्हें बड़ा आश्चर्य होता है। वे सोचने लगते हैं कि हरिहर काका मेरे दोस्त जैसे हैं और मुझसे कभी कोई बात नहीं छुपाते हैं; पर आज वे मुझसे क्यों नहीं बोल रहे हैं। हरिहर काका के साथ क्या हुआ, यह बताने से पहले लेखक अपने गाँव के बारे में विशेषकर मंदिर के बारे में बताते हैं। यह मंदिर उस क्षेत्र की सबसे बड़ी ठाकुरबारी है। लोग तन-मन-धन से इसके प्रति समर्पित हैं। इसके मुखिया महंत जी हैं। हरिहर काका की दोनों पत्नियों की मृत्यु हो चुकी है। उनकी कोई संतान नहीं है। वे अपने भाइयों के परिवार के साथ ही खुश हैं। उनके पास साठ बीघे ज़मीन है। उनके हिस्से पंद्रह बीघे ज़मीन है। घर में उनकी हालत ठीक नहीं है। उन्हें कोई नहीं पूछता है। एक बार उनके यहाँ कोई मेहमान आता है। घर में अच्छा भोजन बनता है, पर हरिहर काका को खाने को रूखा-सूखा ही दिया जाता है। यह देखकर काका गुस्सा हो जाते हैं और थाली आँगन में पटककर चिल्लाते हुए बाहर चले जाते हैं। यह बात महंत जी को पता चलती है, जो पहले से ही हरिहर काका की संपत्ति ठाकुरबारी के नाम करवाने की फ़िराक में थे। वे काका को अपनी ज़मीन ठाकुरबारी के नाम कर देने की खुशामद करते हैं। वे उन्हें अच्छा खाना खिलाते हैं और उनकी खूब सेवा करते हैं। पर काका 'हाँ' या 'ना' कुछ नहीं कहते। उनके भाइयों को अपनी गलती का एहसास होता हैं और वे काका के हाथ-पाँव पड़कर उन्हें घर ले आते हैं। अब घर में उनकी खूब खातिरदारी होती है। उधर महंत जी बौखला जाते हैं। वे बात न बनती देख काका का अपहरण कर उन्हें ठाकुरबारी ले आते हैं। काका के मना करने पर भी वे ज़बरन उनके अँगूठे का निशान सादे और लिखे कागज़ पर ले लेते हैं। फिर उनके हाथ-पैर बाँधकर, मुँह में कपड़ा ठूँसकर उन्हें एक गोदाम में बंदकर भाग जाते हैं। काका के भाई पुलिस लेकर आते हैं और काका को छुड़ाते हैं। अब घर में काका की कड़ी सुरक्षा कर दी जाती है। धीरे-धीरे उनके भाई उन पर ज़बरदस्ती करते हैं कि वे ज़मीन उनके नाम लिख दें। लेकिन काका अब चतुर और ज्ञानी हो गए हैं। वे समझने लगे हैं कि ज़मीन हाथ से जाने के बाद कोई उन्हें नहीं पूछेगा। उनके सामने इसके कई उदाहरण हैं। इस मामले में गाँव वाले भी दो गुटों में बँट गए हैं। एक पक्ष काका के भाइयों का हिमायती है तो दूसरा पक्ष चाहता है कि काका अपनी ज़मीन ठाकुरबारी के नाम लिख दें। इस बार काका के भाई भी उनके साथ वही सब कुछ करते हैं जैसा महंत ने उनके साथ किया था। अब काका को किसी पर भरोसा नहीं रहता। वे अकेले रहने लगते हैं। उन्हें अब दुनिया की समझ हो गई है। गाँव के और लोग भी उनकी संपत्ति हथियाने की कोशिश करते हैं; पर सफल नहीं होते। एक नौकर और कुछ पुलिस वालों के साथ वे बीमारी की हालत में अपना बचा हुआ जीवन काटने लगते हैं। अब वे किसी से कुछ नहीं कहते। इस प्रकार इस कहानी के माध्यम से आज के ग्रामीण और शहरी जीवन में समा रही स्वार्थ-लोलुपता को दर्शाया गया है।

शब्दार्थ

यंत्रणा– यातना/कष्ट, **मनःस्थिति–** मन की स्थिति, **आसक्ति–** लगाव, **वैचारिक–** विचार संबंधी, **मझदार–** जल-प्रवाह या भवसागर के मध्य में, **विलीन होना–** लुप्त हो जाना, **विकल्प–** दूसरा उपाय, **उक्ति–** कथन, **ठाकुरबारी–** देवस्थान, **प्रचलित–** जिसका चलन हो, **जाग्रत–** जगा हुआ, **मनौती–** मन्नत, **परंपरा–** प्रथा, **समिति–** संस्था, **संचालन–** नियंत्रण, **नियुक्ति–** तैनाती। **अहाता–** चारों ओर से दीवारों से घिरा हुआ मैदान, **अखंड–** निर्विघ्न, **दवनी–** गेहूँ/धान निकालने की प्रक्रिया, **अगउम–** प्रयोग

से पहले देवता के लिए निकाला गया अंश, **घनिष्ठ**– गहरा, **प्रवचन**– वेद/पुराण आदि का उपदेश देना, **सार्थक**– उद्देश्य वाला, **परिस्थितिवश**– परिस्थितियों के कारण, **दोनों जून**– दोनों वक्त, **अलावा**– अतिरिक्त, **क्लर्क**– लिपिक/कर्मचारी, **प्रतीक्षारत**– इंतज़ार करते हुए, **इत्मीनान**– तसल्ली।

व्यंजन– अच्छा खाना, **संतोष**– तृप्ति, **मशगूल**– व्यस्त, **धमाचौकड़ी**– उछल-कूद, **दालान**– बरामदा, **मोहभंग**– प्रेम की भ्रांति का नाश, **सराहना**– प्रशंसा, **निश्चिंत**– बेफ़िक्र।

विराजमान– उपस्थित, **हुमाध**– हवन में प्रयुक्त होने वाली सामग्री, **तत्क्षण**– उसी पल, **संयोग**– किस्मत, **एकांत**– अलग, **स्वार्थ**– अपना मतलब, **संकोच**– झिझक, **बैकुंठ**– स्वर्ग, **कीर्ति**– ख्याति, **अकारथ**– अकारण, बेकार।

चिंतामग्न– सोच में पड़ा हुआ, **शंकालु**– संदेह करने वाला, **बेचैन**– व्याकुल, **आशंका**– भय, खतरे, अनिष्ट की संभावना, **मथना**– बार-बार सोचना, **पसीज़ना**– मन में दया का भाव जागना, **याचना**– माँगना, **आवभगत**– सत्कार, **मुस्तैद**– कमर कसकर तैयार, **श्रद्धा**– आदरपूर्ण आस्था या विश्वास, **निरंतर**– लगातार, **तथ्य**– वास्तविक घटना, **वाकिफ़**– परिचित, **अवगत**– जाना हुआ, **अचल**– गतिहीन।

हिमायती– पक्षपाती, **सिवाय**– अलावा, **निष्कर्ष**– परिणाम, **टोह**– खोज, **बय**– वसीयत, **जागरूक**– सावधान, **जबरदस्ती**– बलपूर्वक, **अतिरिक्त**– सिवाय, **राजी**– सहमत, **दबंग**– प्रभावशाली, **परिणत**– जिसमें परिवर्तन हुआ हो, **गोपनीयता**– जो सभी को न बताकर कुछ लोगों को ही बताया जाए, **निर्वाह**– गुजारा, **भनक**– उड़ती खबर, **गुहार**– रक्षा के लिए, **चंपत**– गायब हो जाना, **शुभचिंतक**– भलाई चाहने वाला, **आहट**– किसी के आने-जाने/बात करने की मंद आवाज़, **मय**– युक्त, **दल-बल**– संगी-साथी, **व्याप्त**– पूरी तरह फैला और समाया हुआ, **हरजाने**– हानि के बदले दिया जाने वाला धन, **प्रस्थान करना**– जाना।

श्रद्धेय– श्रद्धा के योग्य, **घृणित**– घिनौना, **दुराचारी**– दुष्ट/बुरा आचरण करने वाला, **नेक**– भला, **बेचैन**– व्याकुल, **उबारना**– निकालना, **एकमात्र**– केवल एक, **इंचार्ज**– प्रभारी, **दस्तक**– दरवाज़ा खटखटाना, **सीमित**– सीमा के अंदर, **असमर्थ**– योग्यता न होना, **रोड़ा**– छोटा पत्थर, **आत्मसमर्पण**– हथियार डाल देना।

सुरमा– योद्धा, **क्रूर**– निर्दयी।

प्रतिक्रिया– प्रतिकार/बदला, **अपेक्षा**– तुलना, **जायदादहीन**– धन-दौलत के बिना, **बाने**– वेश में, **अर्जित**– इकट्ठा, **समक्ष**– सामने, **नकारना**– मना करना, **स्वतः**– अपने आप, **अखरने**– बुरा लगना, **दुर्गति**– बुरी हालत, **प्रतिकार**– विरोध, **प्रहार**– हमला, **चेत**– ध्यान, **तत्परता**– दक्षता, **नेपथ्य**– रंग-मंच के पीछे की जगह, **पैरवी**– खुशामद/अनुगमन।

हस्तगत– अपने हाथों में, **आच्छादित**– ढका हुआ।

पाठाधारित मुहावरे

लाज रखना– इज़्ज़त रखना, **फरार हो जाना**– भाग कर गायब हो जाना, **खून खौलना**– बहुत क्रोध आना, **आँखें भर आना**– बहुत दुख होना, **जान से मार देना**– हत्या कर देना, **चिकनी-चुपड़ी बातें करना**– खुशामद करना, **घुट-घुट कर मरना**– खुलकर न जी पाना, **रंग चढ़ना**– प्रभाव आना, **हड़प लेना**– हथिया लेना, **फूटी आँख न सुहाना**– तनिक भी अच्छा न लगना, **तू-तू-मैं-मैं होना**– आपस में कहा-सुनी होना, **भनक तक न लगना**– कुछ भी पता न चलना।

अभ्यास प्रश्नोत्तर

I. बहुविकल्पीय प्रश्न

1. लेखक के दृष्टिकोण से हरिहर काका के संबंध में कौन-सी बात गलत है?
   (*i*) वे लेखक के पड़ोस में रहते थे। (*ii*) वे लेखक को एक पिता से भी ज़्यादा प्यार करते थे।
   (*iii*) वे लेखक के पक्के दोस्त थे। (*iv*) वे लेखक की आर्थिक मदद करते थे।
2. निम्नलिखित में से कौन लेखक के गाँव के प्रमुख स्थानों में से नहीं है?
   (*i*) गाँव के पश्चिमी किनारे का बड़ा तालाब (*ii*) गाँव के मध्य स्थित पुराना बरगद
   (*iii*) गाँव के उत्तर में स्थित पुराना विद्यालय (*iv*) गाँव के पूरब में स्थित ठाकुरजी का विशाल मंदिर
3. ठाकुरबारी की देख-रेख और संचालन के लिए महंत और पुजारी की नियुक्ति किस प्रकार की जाती थी?
   (*i*) अप्रत्यक्ष मतदान द्वारा (*ii*) ग्राम पंचायत द्वारा
   (*iii*) धार्मिक लोगों की समिति द्वारा (*iv*) इनमें से कोई नहीं

4. निम्नलिखित में से किस गतिविधि का संबंध गाँव की ठाकुरबारी से नहीं है?
   (*i*) ठाकुर जी के प्रति भक्ति-भावना पैदा करना (*ii*) धर्म से विमुख हो रहे लोगों को रास्ते पर लाना
   (*iii*) बाढ़ या सूखे जैसी आपदा में लोगों की मदद करना (*iv*) ग्रामीणों में वैज्ञानिक खेती-बाड़ी के तरीकों को बढ़ावा देना
5. लेखक को ठाकुरबारी के साधु-संत क्यों नहीं सुहाते थे?
   (*i*) ठाकुरजी के नाम पर खाने-पीने तथा आराम फ़रमाने के कारण (*ii*) कोई काम-धाम नहीं करने के कारण
   (*iii*) बातों का धनी होने के कारण (*iv*) उपर्युक्त सभी
6. हरिहर काका ने तीसरी शादी करने से क्यों मना कर दिया?
   (*i*) सामाजिक लोक-लाज के डर से (*ii*) गिरती उम्र तथा धार्मिक संस्कारों की वजह से
   (*iii*) गिरते स्वास्थ्य के कारण (*iv*) अपनी औलाद-प्राप्ति से नाउम्मीद होने के कारण
7. तबीयत खराब होने पर हरिहर काका की आँखें क्यों भर आतीं?
   (*i*) अत्यधिक ज्वर के कारण (*ii*) अपनी देख-भाल नहीं किए जाने के कारण
   (*iii*) इस कठिन समय में पत्नियों की याद आने के कारण (*iv*) उपर्युक्त सभी
8. ठाकुरबारी के पुजारी से सारी बातें जानकर महंत जी हरिहर काका से मिलने के लिए उनके घर की ओर क्यों चल पड़े?
   (*i*) उन्हें शांत मन से परिवार के साथ रहने की शिक्षा देने के लिए (*ii*) उनका क्रोध शांत करने के लिए
   (*iii*) अपने मन की इच्छा पूरी होने की उम्मीद में (*iv*) हरिहर काका के परिवारवालों को समझाने-बुझाने के लिए
9. हरिहर काका के भाइयों को ठाकुरबारी से निराश क्यों लौटना पड़ा?
   (*i*) हरिहर काका द्वारा घर जाने से मना किए जाने के कारण
   (*ii*) ठाकुरवारी के महंत तथा साधु-संतों के समझाने-बुझाने के कारण
   (*iii*) ठाकुरबारी में उपस्थित गाँव के लोगों के समझाने-बुझाने के कारण
   (*iv*) (ii) तथा (iii) दोनों
10. हरिहर काका के भाई रात-भर क्यों नहीं सो सके?
   (*i*) तबीयत खराब होने के कारण (*ii*) ज़मीन-जायदाद हाथ से निकल जाने की आशंका के कारण
   (*iii*) प्राकृतिक विपदा आने के डर से (*iv*) इनमें से कोई नहीं
11. आधी रात को हरिहर काका को कौन उठा ले गए?
   (*i*) डाकू (*ii*) ठाकुरबारी के साधु-संत तथा उनके पक्षधर (*iii*) पुलिसवाले (*iv*) इनमें से कोई नहीं
12. पुलिस को ठाकुरबारी में हरिहर काका किस स्थिति में मिले?
   (*i*) ठाकुरबारी के एक कमरे में सोए हुए (*ii*) ठाकुर जी की पूजा करते हुए
   (*iii*) हाथ-पैर और मुँह बाँधकर डाल दी गई स्थिति में (*iv*) इनमें से कोई नहीं
13. हरिहर काका को रमेसर की विधवा की ज़िंदगी से क्या सबक मिला था?
   (*i*) अपनी ज़मीन भतीजों के नाम लिख देनी चाहिए। (*ii*) ज़मीन लिखकर शेष ज़िंदगी घुट-घुटकर जीना ठीक नहीं।
   (*iii*) ज़मीन अपने रिश्तेदारों को जीते-जी नहीं लिखना चाहिए। (*iv*) (ii) तथा (iii) दोनों
14. गाँव के नेता जी ने हरिहर काका के सामने क्या प्रस्ताव रखा?
   (*i*) पंचायत प्रमुख का चुनाव लड़ने का (*ii*) उनकी ज़मीन पर हाई स्कूल खोलने का
   (*iii*) उनकी ज़मीन पर सार्वजनिक सभागार बनाने का (*iv*) इनमें से कोई नहीं
15. गाँव में चल रही खबर के अनुसार हरिहर काका की मृत्यु के बाद उनकी ज़मीन पर कब्ज़े के लिए उनके भाइयों ने किससे बात पक्की कर ली थी?
   (*i*) ठाकुरबारी के महंत से (*ii*) पुलिस कप्तान से (*iii*) डाकू बुढन सिंह से (*iv*) इनमें से किसी से नहीं

उत्तर– 1. (*iv*) 2. (*iii*) 3. (*iii*) 4. (*iv*) 5. (*iv*) 6. (*ii*)
7. (*iii*) 8. (*iii*) 9. (*iv*) 10. (*ii*) 11. (*ii*) 12. (*iii*)
13. (*iv*) 14. (*ii*) 15. (*iii*)

II. पाठ आधारित प्रश्नोत्तर (3 अंक)

1. कथावाचक और हरिहर काका के बीच क्या संबंध है और इसके क्या कारण हैं? (CBSE 2010, 2012)

उ० कथावाचक जब छोटे थे तब से ही हरिहर काका उन्हें बहुत प्यार करते थे। जब वे बड़े हो गए तो वे हरिहर काका के मित्र बन गए। हरिहर काका उनसे खुलकर बातें करते थे। यही कारण है कि कथावाचक को उनके एक-एक पल की खबर थी। शायद अपना मित्र बनाने के लिए काका ने स्वयं ही उन्हें प्यार से बड़ा किया और इंतजार किया।

2. महंत और अपने भाई हरिहर काका को एक जैसे क्यों लगने लगते हैं? स्पष्ट कीजिए।

(CBSE 2010, 2011, 2012, Sample Paper 2020-21)

उ० हरिहर काका को अपने भाइयों और महंत में कोई अंतर नहीं लगा। दोनों एक ही श्रेणी के लगे। उनके भाइयों की पत्नियों ने कुछ दिन तक तो हरिहर काका का ध्यान रखा, फिर बची-खुची रोटियाँ देने लगीं। बीमारी में कोई पूछने वाला भी न था। जितना भी उन्हें रखा जा रहा था, उनकी ज़मीन के लिए था। इसी तरह महंत ने एक दिन तो बड़े प्यार से खातिर की, फिर ज़मीन को ठाकुरबारी के नाम करने के लिए कहा। काका के मना करने पर उसने उन्हें कई यातनाएँ दीं। इस तरह दोनों ने केवल ज़मीन-ज़ायदाद के लिए काका से व्यवहार रखा। अत: काका को दोनों एक जैसे ही लगे।

3. ठाकुरबारी के प्रति गाँव वालों के मन में अपार श्रद्धा के जो भाव हैं उससे उनकी किस मनोवृत्ति का पता चलता है? (CBSE 2011, 2012)

उ० कहा जाता है कि गाँव के लोग भोले होते हैं। इसके साथ-साथ गाँव के लोग अंधविश्वासी तथा धर्मभीरु होते हैं। मंदिर जैसे स्थान को पवित्र, निष्कलंक तथा ज्ञान का प्रतीक मानते हैं। पुजारी, पुरोहित, महंत जैसे जितने भी धर्म के ठेकेदार हैं, उन पर अगाध श्रद्धा रखते हैं। वे चाहे कितने भी पतित, स्वार्थी और नीच हों, पर उनका विरोध करने से डरते हैं। इसी कारण ठाकुरबारी के प्रति गाँव वालों की अपार श्रद्धा थी। उनका हर सुख-दुख उससे जुड़ा था।

4. अनपढ़ होते हुए भी हरिहर काका दुनिया की बेहतर समझ रखते हैं? कहानी के आधार पर स्पष्ट कीजिए। (CBSE 2010, 2011, 2012)

उ० हरिहर काका अनपढ़ थे, फिर भी उन्हें दुनियादारी की बेहतर समझ थी। जब उनके भाई ज़मीन ज़बरदस्ती अपने नाम कराने के लिए उन्हें डराते थे तब उन्हें गाँव में दिखावा करके ज़मीन हथियाने वालों की याद आती थी। काका ने उन्हें दुखी होते देखा था। इसलिए उन्होंने ठान लिया था, चाहे महंत उकसाए चाहे भाई दिखावा करे, वे ज़मीन किसी को भी नहीं देंगे। एक बार महंत के उकसाने पर वे भाइयों के प्रति धोखा नहीं करना चाहते थे, परंतु जब भाइयों ने भी धोखा दिया तो उन्हें समझ में आ गया कि उनके प्रति उन्हें कोई प्यार नहीं है। जो प्यार दिखाते हैं वह केवल ज़ायदाद के लिए है।

5. हरिहर काका को जबरन उठा ले जाने वाले कौन थे? उन्होंने उनके साथ कैसा व्यवहार किया? (CBSE 2011, 2012)

उ० हरिहर काका को जबरन उठा ले जाने वाले लोग महंत के आदमी थे। महंत ने हरिहर काका को कई बार ज़मीन-जायदाद ठाकुरबारी के नाम कर देने को कहा, परंतु वे नहीं मान रहे थे। महंत ने अपने चेले और साधु संतों के साथ मिलकर उनके हाथ-पैर बाँध दिए, मुँह में कपड़ा ठूँस दिया और ज़बरदस्ती अँगूठे के निशान लिए और उन्हें एक कमरे में बंद कर दिया। जब पुलिस आई तो स्वयं गुप्त दरवाज़े से भाग गया।

6. हरिहर काका के मामले में गाँव वालों की क्या राय थी और उसके क्या कारण थे? (CBSE 2010, 2011)

उ० कहानी के आधार पर गाँव के लोगों को बिना बताए पता चल गया कि हरिहर काका को उनके भाई नहीं पूछते। इसलिए सुख-आराम का प्रलोभन देकर महंत उन्हें अपने साथ ले गया। भाई मन्नत करके काका को वापिस ले आए। इस तरह गाँव के लोग दो पक्षों में बँट गए, कुछ लोग महंत की तरफ थे जो चाहते थे कि काका अपनी ज़मीन धर्म के नाम पर ठाकुरबारी को दे दें ताकि उन्हें सुख-आराम मिले, मृत्यु के बाद मोक्ष तथा यश मिले। लेकिन दूसरे पक्ष के लोग कहते थे कि ज़मीन परिवार वालों को दी जाए। मंदिर को ज़मीन देना अन्याय होगा। इस तरह दोनों पक्ष अपने-अपने हिसाब से सोच रहे थे, परंतु हरिहर काका के बारे में कोई नहीं सोच रहा था। इन बातों का एक कारण यह भी था कि काका विधुर थे और उनकी कोई संतान भी नहीं थी।

7. कहानी के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि लेखक ने यह क्यों कहा, "अज्ञान की स्थिति में ही मनुष्य मृत्यु से डरते हैं। ज्ञान होने के बाद तो आदमी आवश्यकता पड़ने पर मृत्यु को वरण करने के लिए तैयार हो जाता है।" (CBSE 2011, 2012)

उ० जब काका को असलियत पता चली तब उन्हें समझ में आ गया कि सब लोग उनकी ज़मीन-ज़ायदाद के पीछे हैं, तब उन्हें वे सभी लोग याद आ गए, जिन्होंने परिवार वालों के मोह में आकर अपनी ज़मीन उनके नाम कर दी और मृत्यु तक तिल-तिल कर मरते रहे, दाने-दाने को मोहताज़ हो गए। इसलिए उन्होंने सोचा कि इस तरह रहने से तो एक बार मरना अच्छा है। जीते जी

वे अपनी ज़मीन किसी को भी नहीं देंगे। चाहे ये लोग मुझे एक बार में ही क्यों न मार दें। अत: लेखक ने कहा कि अज्ञान की स्थिति में मनुष्य मृत्यु से डरता है, परंतु ज्ञान होने पर मृत्यु के वरण को तैयार रहता है।

8. समाज में रिश्तों की क्या अहमियत है? इस विषय पर अपने विचार प्रकट कीजिए।

(CBSE 2010, 2013, 2018, 2019)

उ० आज समाज में मानवीय मूल्य धीरे-धीरे समाप्त होते जा रहे हैं। ज़्यादातर व्यक्ति अपने स्वार्थ के लिए रिश्ते निभाते हैं, अपनी आवश्यकताओं के हिसाब से मिलते हैं। अमीर रिश्तेदारों का सम्मान करते हैं, उनसे मिलने को आतुर रहते हैं जबकि गरीब रिश्तेदारों से कतराते हैं। आज केवल स्वार्थ-सिद्धि की अहमियत रह गई है। आए दिन हम अखबारों में समाचार पढ़ते हैं कि ज़मीन-ज़ायदाद, पैसे, जेवर के लिए लोग हत्या व अपहरण जैसे नीच कार्य कर जाते हैं।

9. हरिहर काका की नज़र में महंत कब घृणित और दुराचारी लगने लगा? **(CBSE 2010)**

उ० हरिहर काका जब नाराज़ होकर घर से निकले तो महंत उन्हें अपने साथ ठाकुरबारी ले गया। उसे लगा अगर हरिहर की पंद्रह बीघे ज़मीन ठाकुरबारी के नाम हो गई तो उन सबकी मौज हो जाएगी। उसने काका को बहलाना शुरू किया और सुखी जीवन का प्रलोभन दिया। हालाँकि हरिहर काका अपनी ज़मीन पर भाइयों का हक समझते थे। इसलिए वे महंत की बातों में नहीं आए। अत: महंत ने उनका अपहरण करवाकर ज़बरदस्ती उनके अँगूठे का निशान कुछ कागज़ों पर ले लिया। ये देखकर हरिहर काका को आघात लगा। तब उनकी नज़र में महंत घृणित और दुराचारी लगने लगा।

10. भाइयों के परिवार के प्रति काका के मोहभंग की शुरूआत कब हुई? 'हरिहर काका' कहानी के आधार पर स्पष्ट करें।

उ० हरिहर काका की पत्नी का निधन हो गया था। वे नि:संतान थे। उनके तीनों भाइयों की पत्नियों ने कुछ दिन तो उनकी देख-रेख की, लेकिन अब वे उनकी खोज-खबर भी नहीं लेती थीं। बीमार होने पर कोई उनको पानी भी नहीं पूछता था। इसी दौरान उनके घर शहर में काम करने वाले भतीजे का दोस्त आया, जिसके स्वागत में खूब स्वादिष्ट भोजन बना, लेकिन किसी ने भी हरिहर काका को नहीं पूछा। जब उन्होंने खुद माँगा तो उन्हें भात-मट्ठा और अचार परोस दिया गया। यह देखकर उनके तन-बदन में गुस्से की ऐसी आग लगी कि उन्होंने भोजन की थाली उठाकर आँगन में फेंक दी। उसी दिन से काका का अपने परिवार के प्रति मोह कम होने लगा।

11. 'यह कहानी अंधभक्ति और ठाकुरबारी के चरित्र को उजागर करती है।' सोदाहरण स्पष्ट करें। **(CBSE 2012)**

उ० 'हरिहर काका' कहानी अंधभक्ति और ठाकुरबारी के चरित्र को उजागर करती है। कहानी में धर्म के ठेकेदार एक महंत को छल-बल का प्रयोग करते हुए दिखाया गया है। गाँव में इतनी अंधभक्ति है कि वे अपनी समस्त सफलता का श्रेय ठाकुरजी को देते हैं और खुशी से रुपये, पैसे, गहने और ज़मीन भी दान में देते हैं। उन्हें ठाकुरबारी की विशालता पर गर्व होता है। ठाकुरबारी का महंत धर्म की आड़ में स्वार्थपूर्ति करता है। हरिहर काका को नि:संतान देखकर उनकी पंद्रह बीघे की उपजाऊ ज़मीन को वह छल-बल से हासिल करना चाहता है। इसके लिए वह हिंसा का सहारा लेने से भी बाज नहीं आता। स्वार्थवश कोई भी गलत कार्य करने से उसे कोई एतराज नहीं है।

12. ठाकुरबारी के प्रति गाँव वालों के मन में अपार श्रद्धा के जो भाव हैं, इससे उनकी किस मनोवृत्ति का पता चलता है? **(CBSE 2013)**

उ० ठाकुरबारी गाँव के लोगों की आस्था और श्रद्धा का केंद्र है। यह गाँव का पुराना और अत्यंत विशाल मंदिर है। कृषि कार्य में दिन भर डूबे रहनेवाले ग्रामीणों का बाकी समय ठाकुरबारी में ही बीतता था। वे अपनी हर सफलता और संपन्नता का कारण ठाकुरजी की कृपा मानते थे। मुकदमें में जीत हो या लड़की का विवाह, पुत्र जन्म हो या पुत्र को नौकरी मिलने की खुशी, वे सभी में खुले मन से ठाकुरजी को रुपये, अनाज और जेवर चढ़ाकर अपनी श्रद्धा व्यक्त करते हैं। इस श्रद्धा से उनकी धर्मभीरु प्रवृत्ति का पता चलता है। वे बेहद धार्मिक और सात्विक प्रवृत्ति के हैं। उनके मन में अपार भक्ति-भावना है।

13. महंत जी ने हरिहर काका की किस प्रकार आवभगत की? **(CBSE 2013)**

उ० हरिहर काका को रात में ठाकुरबारी में ऐसे मिष्ठान्न और व्यंजन मिले जो उन्होंने अपनी पूरी ज़िंदगी में कभी नहीं खाए थे। पुजारी जी ने उन्हें अपने हाथों से खाना परोसा था। घी टपकते मालपुए, रस बुनिया, लड्डू, छेने की तरकारी, दही और खीर। महंत जी पास में ही बैठे-बैठे धर्म-चर्चा से उनके मन में अपार शांति का भाव भर रहे थे। हरिहर काका को ठाकुरबारी में एक ही रात में इतना अपार सुख मिला जो उन्होंने अपने पूरे जीवन में नहीं पाया था।

14. बंधनमुक्त होने पर हरिहर काका को उनके परिवार वालों ने किस प्रकार रखा? **(CBSE 2014)**

उ० हरिहर काका को महंत के चंगुल से निकालकर उनके भाइयों ने उन्हें बेहद संभाल के रखा जैसे कोई बेशकीमती चीज़ रखी जाती है। उनका कमरा दालान से घर के अंदर कर दिया गया। वे एक चीज़ भी माँगते तो चार चीज़ें हाज़िर की जाती थीं। परिवार के सभी सदस्य उनका ध्यान रखते। रिश्ते-नाते के सभी सूरमाओं को भाइयों ने इकठ्ठा किया और हथियार भी जूटा लिए गए थे। काका को जब भी घर से निकलकर गाँव में जाना होता तो हथियारों से लैस चार-पाँच लोग उनके आगे-पीछे होते। भाइयों ने

15. हरिहर काका के प्रति उनके भाइयों के परिवार का कैसा व्यवहार था? (CBSE 2015)

उ० हरिहर काका ने दो बार शादी की, उनकी पत्नियाँ असमय काल-कवलित हो गईं। वे संतानहीन भी थे। अत: भाइयों ने अपनी पत्नियों को उनका ध्यान रखने को कहा था। शुरू में तो उन्होंने उनकी ज़रूरत का ख्याल रखा, फिर धीरे-धीरे वे सिर्फ़ अपने पतियों का ध्यान रखने लगीं। तबियत खराब होने पर भी कोई उन्हें एक गिलास पानी भी नहीं देता था। सब अपने कामों में मशगूल रहते। बच्चे पढ़ाई और खेल-कूद में उलझे रहते। भोजन के लिए उनको बचा हुआ और रूखा-सूखा भोजन दिया जाता था। परिवार के सभी सदस्य उनसे उपेक्षित व्यवहार करते थे।

16. हरिहर काका अपने भाइयों के परिवार में रहने के लिए कैसे तैयार हुए? (CBSE 2015)

उ० हरिहर काका अपने भाइयों की पत्नियों के व्यवहार से रूठकर ठाकुरबारी चले गए थे। शाम को जब खेत से सभी भाई लौटे तो उन्हें इस बात का पता लगा। उन्होंने अपनी पत्नियों को डाँटा और काका को मनाने के लिए ठाकुरबारी पहुँच गए। वे सभी काका के चरणों में सर रखकर फूट-फूटकर रोने लगे। उन्होंने अपनी-अपनी पत्नियों को सजा देने की बात भी कही। उस रात तो महंत ने उन्हें जाने नहीं दिया। यह सब देखकर काका का दिल पसीज गया और वे अपने भाइयों के साथ लौट आए। काका वैसे भी खून के रिश्ते को ज्यादा बड़ा समझते थे।

17. महंत द्वारा हरिहर काका का अपहरण किए जाने के बाद गाँव के कुछ लोग किस प्रकार उनके भाइयों के घर पर जुटने लगे थे? इस घटना से समूचे गाँव पर क्या प्रभाव पड़ा? स्पष्ट कीजिए। (CBSE 2016)

उ० महंत द्वारा हरिहर काका का अपहरण किए जाने के बाद नाते-रिश्ते के 'सूरमाओं' को भाइयों ने घर में बुला लिया। वे हथियार सहित काका की सुरक्षा में तैनात कर दिए गए। गाँव के लोगों को भी काका के अपहरण का प्रसंग मालूम हुआ। वे लोग दो वर्गों में बँट गए, एक वर्ग धार्मिक संस्कारों से जुड़ा चटोरों का था जो चाहता था कि काका अपनी ज़मीन ठाकुरबारी के नाम लिख दें। दूसरा वर्ग परिवार का हितैषी था, जो उनकी ज़मीन उनके भाइयों को देने का पक्षधर था। वे आपस में बहस करते हुए तू-तू, मैं-मैं तक करने लगे थे। सारे गाँव का वातावरण तनावपूर्ण था और वे काका के अगले कदम की प्रतीक्षा भी कर रहे थे।

18. महंत ने हरिहर काका के साथ दो अलग-अलग प्रकार का व्यवहार किस प्रकार और क्यों किया? (CBSE 2017)

उ० महंत ने दो अवसरों पर हरिहर काका से दो अलग-अलग तरह का व्यवहार किया। पहली बार जब काका घर से बहुओं द्वारा अपमानित होकर गुस्से से निकले तो महंत उन्हें अपने साथ ठाकुरबारी ले गया और वहाँ उनकी जमकर खातिरदारी की। उनको साफ-सुथरे और आरामदेह बिस्तर पर लिटाया गया तथा रात को भोजन में ऐसे-ऐसे मिष्ठान्न और व्यंजन दिए गए जो उन्होंने कभी नहीं खाए थे।

दूसरे अवसर पर महंत का व्यवहार काका के प्रति बेहद यातनापूर्ण था। काका की ज़मीन हड़पने के लिए उन्होंने उनका अपहरण तक करवा लिया। उन्हें मारा-पीटा और उनके अँगूठे का निशान भी ले लिया। साथ ही उनके मुँह में कपड़ा ठूँस दिया कि वे चिल्ला न सकें। इन सब कारणों से काका का महंत के प्रति मोहभंग हो गया। महंत को पहले उनसे ज़मीन मिलने की आशा थी, इसलिए अच्छा व्यवहार किया लेकिन असफल रहने पर उसने काका से दुर्व्यवहार किया।

19. अपने हिस्से का खेत ठाकुरजी के नाम लिख देने पर हरिहर काका को होने वाले किन लाभों का प्रलोभन महंत जी ने दिया? (CBSE 2017)

उ० महंत हरिहर काका की ज़मीन हड़पना चाहता था। इसलिए वह हरिहर काका को समझाने की कोशिश कर रहा था कि संसार नश्वर है। हरिहर काका की अपने भाइयों के परिवार की ओर आसक्ति थी। इसलिए महंत उनकी धार्मिक प्रवृत्ति को उकसाकर, उनके भाइयों को स्वार्थी बताकर उन्हें ज़मीन ठाकुरबारी के नाम करने के लिए प्रेरित कर रहा था। उसने हरिहर काका को समझाते हुए कहा कि यहाँ कोई किसी का नहीं है। सब माया के बंधन हैं। इससे बाहर निकलकर ईश्वर की भक्ति में मन लगाएँ। ठाकुरजी के नाम खेत लिख देने से बैकुंठ तो मिलेगा ही कीर्ति होने के साथ-साथ जीवन भी सार्थक हो जाएगा। पुश्तों तक लोग इस दान को याद रखेंगे। बाकी बची हुई ज़िंदगी आरामपूर्वक यहीं गुज़ारना। भाई तभी तक पूछेंगे, जब तक वे उनके नाम ज़मीन न कर दें।

20. कहानी में हरिहर काका और उनके परिवार के बारे में क्या बताया गया है? विस्तारपूर्वक लिखिए। (CBSE 2011)

उ० 'हरिहर काका' लेखक के पड़ोस में रहने वाले एक नि:संतान विधुर थे। उनके तीन भाई थे, जिनका भरा-पूरा परिवार था, उनके बच्चे सयाने थे। काका भाइयों के साथ ही रहते थे। काका के भाइयों की पत्नियाँ न तो उनका ख्याल रखती थीं, न ढंग से

खाना-पीना देती थीं। हरिहर काका पंद्रह बीघे उपजाऊ ज़मीन के मालिक थे। उनकी ज़मीन पर गाँव के महंत की भी कुत्सित नज़र थी। एक दिन बचा हुआ खाना देने पर काका गुस्से से भोजन की थाली फेंककर घर से निकल पड़े। महंत उन्हें ठाकुरबारी ले जाकर ज़मीन ठाकुर जी को देने के लिए उकसाने लगा। लेकिन काका नहीं माने तो उनका अपहरण करवा लिया और उनके अँगूठे का निशान कागज़ों पर ले लिया। उनके भाई पुलिस के साथ उन्हें छुड़वाकर ले गए और वे भी उनके साथ वही सब दोहराए। काका उन सभी के व्यवहार से बेहद उदासीन होकर अकेले पुलिस की सुरक्षा में अपना जीवन बिताने लगे। वे किसी से बात तक नहीं करते थे। उन्होंने जीते-जी अपनी ज़मीन किसी को भी नहीं देने की मन में ठान ली थी।

21. हरिहर काका ने अपनी संपत्ति से संबंधित क्या निर्णय लिया और क्यों? **(CBSE 2015)**

उ० हरिहर काका को जब महंत के चंगुल से छुड़वाकर लाया गया तो भाइयों ने कुछ दिन बाद ही उनसे निवेदन किया कि वे अपनी ज़मीन भतीजों के नाम लिख दें। लेकिन अनपढ़ काका ने अनुभवों की समझदारी दिखाते हुए कहा कि वे ज़मीन किसी के नाम नहीं लिखेंगे। उनके मरने के बाद स्वत: ही ज़मीन भाइयों को मिल जाएगी। काका ने गाँव में ऐसे अनेक उदाहरण देखे थे, जिन्होंने जीते-जी ज़मीन नाते-रिश्तेदारों के नाम करने के बाद घनघोर कष्ट और यातनाएँ सही थीं। वे रमेसर की विधवा की तरह घुट-घुट कर नहीं जीना चाहते थे। काका समझ गए थे कि उनके भाई का परिवार आज उन्हें जो मान और इज़्ज़त दे रहा है, उसका कारण उनकी जायदाद है। महंत के छल-प्रपंच और कुत्सित इरादों को भी वे देख चुके थे। अत: उन्होंने एक चतुर और ज्ञानी के समान अपनी ज़मीन जीते जी भाइयों या महंत के नाम न लिखने का बुद्धिमानी भरा फैसला लिया।

22. हरिहर काका के प्रति उनके भाइयों के व्यवहार में समय-समय पर क्या-क्या परिवर्तन आए और क्यों?

(CBSE 2016)

उ० हरिहर काका के भाइयों ने उनकी देख-रेख अपनी पत्नियों को सौंप दी और निश्चिंत हो गए। उनके दुर्व्यवहार के कारण काका जब नाराज़ होकर घर से निकले तो महंत उन्हें ठाकुरबारी ले गया। भाइयों ने काका के पाँव पकड़े तो वे उनके साथ घर वापस आ गए। घर लाकर भाइयों ने काका की खूब खातिरदारी की। महंत द्वारा अपहरण किए जाने के उपरांत भाई जब काका को उसके चंगुल से छुड़वाकर लाए तो उन्होंने काका की ज़मीन हड़पने की भूमिका बाँधी और ज़मीन भतीजों के नाम लिखने का निवेदन किया। जब काका ने उन्हें साफ इंकार कर दिया तो भाइयों का व्यवहार पुन: बदल गया और वे काका के साथ दुर्व्यवहार करते हुए हिंसा पर उतर आए। उनके इस परिवर्तित रूप का कारण हरिहर काका की ज़मीन थी, जिसे वे हर कीमत पर हथियाना चाहते थे।

23. 'हरिहर काका' कहानी समाज के किस कटु सत्य को उजागर करती है? स्पष्ट कीजिए।

(CBSE 2017)

उ० 'हरिहर काका' कहानी समाज के कई सत्यों को उजागर करती है। आज के रिश्ते स्वार्थ पर आधारित हैं। स्वार्थ हटा नहीं कि रिश्ते धराशायी होने लगते हैं। आज जायदाद पाने के लिए छल-बल का प्रयोग करते हुए परिवारजनों के साथ तथाकथित धर्म के ठेकेदारों को लिप्त देखा जा सकता है। वे अपनी स्वार्थ-लिप्सा की पूर्ति के लिए बेहिचक हिंसात्मक प्रवृत्ति दिखाते हैं। हरिहर काका इसका ज्वलंत उदाहरण हैं। उनके साथ भाइयों और महंत ने जो किया वह अत्यंत ही घृणास्पद और निंदनीय है।

24. हरिहर काका का चरित्र-चित्रण कीजिए। **(CBSE 2017)**

उ० हरिहर काका का चरित्र-चित्रण–

अनपढ़ परंतु अनुभवी व्यक्ति– हरिहर काका अनपढ़ थे, फिर भी उन्हें दुनियादारी की बेहद समझ थी। जब उनके भाई ज़बरदस्ती ज़मीन अपने नाम कराने के लिए डराते थे तो उन्हें गाँव में दिखावा करके ज़मीन हथियाने वालों की याद आती थी। काका ने उन्हें दुखी होते देखा था। इसलिए उन्होंने ठान लिया था कि चाहे महंत उकसाए चाहे भाई दिखावा करें, वे ज़मीन किसी को भी नहीं देंगे। एक बार महंत के उकसाने पर भी वे भाइयों के प्रति धोखा नहीं करना चाहते थे, परंतु जब भाइयों ने भी धोखा दिया तो उन्हें समझ में आ गया कि उनके प्रति उन्हें कोई प्यार नहीं है। जो प्यार दिखाते हैं वह केवल ज़ायदाद के लिए है।

हँसमुख– हरिहर काका एक हँसमुख व्यक्ति थे। वे अकेले होते हुए भी चेहरा दुखी नहीं रखते थे। लेखक को उनके मुख की हँसी हमेशा याद रहती है।

अंतर्मुखी– अपने साथ हुए हादसों ने काका को इतना तोड़ दिया कि वे चुप रहने लगे। उनकी चुप्पी और खाली आँखें सब कुछ बयान कर जाती थीं। उनमें दुख और दर्द इस प्रकार दिखाई देता है कि लेखक तक डर गया था। उनकी चुप्पी इस बात का प्रमाण थी कि वे अंदर ही अंदर घुट रहे थे। परंतु वे किसी को कुछ कहते नहीं थे।

अभ्यास प्रश्न पत्र

नाम– ..... रोल नं. .....

समय– 30 मिनट कुल अंक– 12

1. निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40-50 शब्दों में दीजिए। [3×2=6]

(क) लेखक को ठाकुरबारी जाना क्यों पसंद था?

.....

.....

.....

.....

(ख) महंत जी ने हरिहर काका को ज़मीन देने के लिए कैसे प्रेरित किया?

.....

.....

.....

.....

(ग) हरिहर काका की सहनशक्ति कब जवाब दे गई?

.....

.....

.....

.....

2. निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40-50 शब्दों में दीजिए। [3×2=6]

(क) गाँव के लोगों में हरिहर काका चर्चा का केंद्र क्यों बने हुए थे?

.....

.....

.....

.....

(ख) हरिहर काका के मन में घरवालों के प्रति क्रोध का भाव क्यों उत्पन्न हुआ?

.....

.....

.....

.....

(ग) महंत जी को कैसे पता चला कि हरिहर काका के घर पर कोई घटना घटी है?

.....

.....

.....

.....

❑❑❑